जुमा का ख़ुतबा

22 रबी-उल-अव्वल 1448 हिजरी (मुताबिक़ 4 सितंबर 2026 ईस्वी

التشاؤم خطره و علاجه

बदशगुनी: ख़तरा और उसका इलाज

إِنَّ الحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَن لَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، { يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ } [آل عمران: 102]

ऐ मुसलमानो! सही ईमान और कामिल तौहीद की मांग यह है कि इंसान हर उस चीज़ से बचे जो उसके ईमान और दीन पर असरअंदाज़ हो और उसकी तौहीद और यक़ीन में दरार डाले। हमारे पाक दीन ने जाहिलियत के जिन रस्म व रिवाज को बातिल क़रार दिया है और हमारे नबी करीम ﷺ ने जिन से डराया है, उन्हीं में से एक "बदशगुनी और बदफ़ाली" लेना भी है। अर्थात् अशुभ या मनहूस मानना है, क्योंकि बदशगुनी से इंसान के दिल में अपनी पसंदीदा चीज़ के हासिल होने और नापसंदीदा चीज़ से छुटकारे के लिए अल्लाह के अलावा दूसरों की तरफ़ तवज्जो पैदा होती है।

कुफ़्फ़ार परिंदों से बदशगुनी लिया करते थे। अगर परिंदा दाहिने तरफ़ उड़ता तो कहते: "यह अच्छा है" और जो काम करना चाहते उसे कर गुज़रते। और अगर परिंदा बाएं तरफ़ उड़ता तो कहते: "यह बुरा है" और काम करने से रुक जाते। उसी तरह अगर उनमें से किसी के घर पर "कौआ" बैठ जाता तो वह बदशगुनी लेते और बुराई के होने से डरते।

अल्लाह के बंदो! बदशगुनी की कई सूरतें और उसकी अलग-अलग क़िस्में हैं। जैसे: किसी ख़ास नंबर जैसे 13 को मनहूस समझना, जैसा कि ईसाइयों का गुमान है; या किसी

आदमी से बदशगुनी लेना और यह कहना कि: "फ़लाँ आदमी का चेहरा ही मनहूस है, मैं जब भी उसके साथ सफ़र करता हूँ मुझे फ़लाँ-फ़लाँ तकलीफ़ पहुँचती है"; या कुछ लोगों का यह कहना:

"خَيْر يَا طَيْر" यानी परिंदे को देखकर अच्छाई का शगुन लेना। यह तमाम बातें मना हैं। क्योंकि भलाई सिर्फ़ अल्लाह तआला की तरफ़ से आती है, तमाम भलाई उसी के हाथ में है और तमाम मामले उसी की तरफ़ लौटाए जाते हैं।

बदशगुनी की हक़ीक़त यह है कि यह शैतान की तरफ़ से दिल में डाला गया वसवसा, उसका डर और सिर्फ एक वहम है, साथ ही यह अल्लाह के अलावा दूसरों से दिल लगाना और अल्लाह के साथ बदगुमानी और बुरी अनुमान है। क्योंकि ऐसा करने वाले ने यह अक़ीदा बना लिया कि यह चीज़ अल्लाह के अलावा नफ़ा या नुक़सान पहुँचा सकती है।

इसलिए बदफ़ाली का विरोध करना और उसकी जड़ों को काटना वाजिब है; ख़ास तौर से इसलिए कि नबी करीम ﷺ ने इसे शिर्क क़रार दिया है और उम्मत को इससे डराया है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा:

الطِّيَرَةُ شِرْكٌ، الطِّيَرَةُ شِرْكٌ (رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ، وَصَحَّحَهُ الْأَلْبَانِيُّ)

"बदशगुनी लेना शिर्क है, बदशगुनी लेना शिर्क है।"- (इस हदीस को इमाम अहमद और इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया है और अल्लामा अल्-बानी ने इसे सही कहा है।)

बदशगुनी लेना काफ़िरों और रसूलों के दुश्मनों की आदत रही है। फ़िरऔन की क़ौम को जब भी कोई मुसीबत या क़हत पहुँचता तो वह दावा करते कि यह संकट और मुसीबत मूसा और उनके साथियों की नहूसत (अशुभता) की वजह से आई है। अल्लाह तआला ने कहा:

وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَطَّيَّرُوا بِمُوسَى وَمَنْ مَعَهُ (سورة الأعراف: 131)

"और अगर उनको कोई बदहाली पेश आती तो मूसा (अलैहिस्सलाम) और उनके साथियों की नहूसत बताते।"-
तो अल्लाह तआला ने उनका खंडन करते हुए कहा:

«أَلَا إِنَّمَا طَائِرُهُمْ عِنْدَ اللَّهِ»

"याद रखो कि उनकी नहूसत अल्लाह तआला के पास है। "-
यानी उनको जो परेशानी और आज़माइश से दोचार किया जाता है, यह सब अल्लाह तआला की तक़दीर और उसके फ़ैसले का हिस्सा है। और ऐसा उनके कुफ़्र, उनके गुनाहों और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का इनकार करने के नतीजे में हो रहा है।
फिर अल्लाह तआला ने उनमें से ज़्यादातर लोगों को अज्ञानता से मन्सूब करते हुए कहा:

«وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ»

"लेकिन उनके अक्सर लोग नहीं जानते।"
जबकि ईमान वाले मुवह्हिदीन का हाल यह होता है कि वे तौहीद की ग़ैरत रखते हैं और ऐसे आदमी पर सख़्त इन्कार करते हैं जो तौहीद में कोताही करे। एक बार एक परिंदा बोलता हुआ गुज़रा तो एक आदमी ने कहा: "भला है, भला है"। इस पर इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़ौरन इन्कार करते हुए कहा: "न भला है न बुरा" ताकि वह आदमी परिंदे के भलाई या बुराई में असरअंदाज़ होने का अक़ीदा न बना ले।
इस्लाम के सपूतो! कभी-कभी बदशगुनी बिना किसी इख़्तियार के दिल में आ जाती है और बिना किसी इरादे के कुछ चीज़ों से बदशगुनी का एहसास हो जाता है। इससे शायद ही कोई इंसान महफ़ूज़ रह सके। तो जिसके साथ ऐसा हो, उसे चाहिए कि वह उसकी तरफ़ बिल्कुल ध्यान न दे, अल्लाह पर डर और उम्मीद के जज़्बात के साथ भरोसा (तवक्कुल) करते हुए अपने काम को पूरा करे, तो यह चीज़ उसे कोई नुक़सान नहीं पहुँचाएगी। उसी के साथ उसे वह दुआ पढ़नी चाहिए जिसका हुक्म नबी करीम ﷺ ने

दिया है, जैसा कि सुनन अबी दाऊद की रिवायत है, अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा: "जब तुम में से कोई ऐसी चीज़ देखे जिसे वह नापसंद करता हो तो कहे:

اللَّهُمَّ لَا يَأْتِي بِالْحَسَنَاتِ إِلَّا أَنْتَ، وَلَا يَدْفَعُ السَّيِّئَاتِ إِلَّا أَنْتَ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِكَ(رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ بِسَنَدٍ صَحِيحٍ)

"ऐ अल्लाह! भलाइयां सिर्फ़ तू ही लाता है, और बुराइयों को सिर्फ़ तू ही दूर करता है, और गुनाहों से बचने और नेकी करने की ताक़त सिर्फ़ तेरे ज़रिए ही है"। (इस हदीस को इमाम अबू दाऊद ने सही सनद से रिवायत किया है)

रहा वह आदमी जिसने कोई नापसंद चीज़ देखी या सुनी और बदशगुनी लेते हुए अपने काम को छोड़ दिया, तो उसने एक गुनाहे-कबीरा (बड़ा गुनाह) और बुराई का काम किया है, इसलिए उसे फ़ौरन अल्लाह की बारगाह में तौबा करनी चाहिए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कहा :

«مَنْ رَدَّتْهُ الطِّيَرَةُ مِنْ حَاجَةٍ فَقَدْ أَشْرَكَ»

"जिस शख़्स को बदशगुनी ने किसी काम से रोक दिया, उसने समझो शिर्क किया।"

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा: या रसूलुल्लाह! इसका कफ़्फ़ारा क्या है?

नबी करीम ﷺ ने कहा: यूँ कह लिया करे:

اللَّهُمَّ لَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرُكَ، وَلَا طَيْرَ إِلَّا طَيْرُكَ، وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ (رَوَاهُ أَحْمَدُ بِسَنَدٍ حَسَنٍ)

"अल्लाहुम्मा ला ख़ैरा इल्ला ख़ैरुका, व ला तैरा इल्ला तैरुका, व ला इलाहा ग़ैरुका।"

"ऐ अल्लाह! तेरी भलाई के अलावा कोई भलाई नहीं, तेरे शगून (तक़दीर) के अलावा कोई शगून नहीं, और तेरे सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं"। (इस हदीस को इमाम अहमद ने हसन सनद से रिवायत किया है।)

इसलिए मुसलमान पर वाजिब है कि वह इन ग़लत अक़ीदों से ख़ुद भी बचे और दूसरों को भी ख़बरदार करे। क्योंकि बदशगुनी लेने वाला अल्लाह से अपना भरोसा तोड़ देता है और एक वहमी चीज़ से दिल लगा लेता है। बल्कि उस पर ज़रूरी है कि वह अपने

उस रब पर भरोसा करे जिसके हाथ में सारे मामलों की चाबियाँ हैं, और यह वहम और ख़ुराफ़ात उसे उसकी ज़रूरत और काम से न रोक सकें।

بَارَكَ اللهُ لِي وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ، وَنَفَعَنِي وَإِيَّاكُمْ بِمَا فِيهِ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ، أَقُولُ قَوْلِي هَذَا، وَأَسْتَغْفِرُ اللهَ لِي وَلَكُمْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ، وَأَتُوبُ إِلَيْهِ؛ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ.

दूसरा ख़ुतबा

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى أَشْرَفِ الْمُرْسَلِينَ، نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ، وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ. أَمَّا بَعْدُ: فَأُوصِيكُمْ وَنَفْسِي بِتَقْوَى اللهِ تَعَالَى؛ فَإِنَّ مَنِ اتَّقَى اللهَ وَقَاهُ، وَعَصَمَهُ وَآوَاهُ

अल्लाह के बंदो! बदशगुनी इंसान के दिमाग़ को नकारात्मक सोच, डर और निराशा की तरफ़ धकेल देती है, जबकि नेक फ़ाल (अच्छी उम्मीद) इंसान के अंदर सकारात्मक सोच, उम्मीद और हौसला पैदा करती है। इस्लाम इंसान को अंधेरे और वहमी ख़यालों से निकालकर रोशनी और उम्मीद की तरफ़ लाता है। बदशगुनी इंसान का रिश्ता अल्लाह से तोड़कर उसे कमज़ोर और बेबस मख़लूक़ या चीज़ों से जोड़ती है। जबकि नेक फ़ाल इंसान का रिश्ता अपने पैदा करने वाले ख़ालिक़ से मज़बूत करती है, क्योंकि अच्छी सोच की असली बुनियाद अल्लाह की रहमत और उसके रहीम व करीम होने पर पूरा यक़ीन है।

बदशगुनी लेने वाला आदमी डर और वहम की वजह से अपने जायज़ कामों और फ़ैसलों से रुक जाता है और अमल से महरूम हो जाता है; जबकि अच्छी उम्मीद रखने वाला आदमी अल्लाह पर भरोसा (तवक्कुल) करके आगे बढ़ता है, जिससे उसके दिल को सुकून, ख़ुशी और इत्मीनान हासिल होता है।

नेक फ़ाल लेने का मतलब यह है कि इंसान अल्लाह पर भरोसा करते हुए कोई काम करे या उसका इरादा करे, फिर वह कोई ऐसी अच्छी बात सुन ले जो उसे ख़ुश कर दे, जिससे उसका दिल खिल जाए, रूह ख़ुश हो जाए और जिस काम की तरफ़ वह ध्यान

दे रहा है उसमें उसकी दिलचस्पी और कोशिश और बढ़ जाए; जैसे वह किसी ऐसे आदमी को देखे जिसका नाम "मुबारक" हो, तो वह उस दिन में बरकत की अच्छी उम्मीद क़ायम कर ले। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने कहा:

لَا عَدْوَى وَلَا طِيَرَةَ، وَيُعْجِبُنِي الْفَأْلُ الصَّالِحُ: الْكَلِمَةُ الْحَسَنَةُ (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

"बीमारी का ख़ुद-ब-ख़ुद फैलना और बदशगुनी लेना कोई हक़ीक़त नहीं रखता, और मुझे नेक फ़ाल यानी अच्छी बात पसंद है"। (इस हदीस को इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है)

सुल्ह-ए-हुदैबिया के मौक़े पर जब सुहैल बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु — जो उस वक़्त काफ़िर थे — नबी करीम ﷺ की सेवा में आए, तो आप ﷺ ने उनके नाम से नेक फ़ाल लेते हुए कहा:

لَقَدْ سَهُلَ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ(رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ عَنْ عِكْرِمَةَ مُرْسَلًا)

"यक़ीनन तुम्हारा मामला आसान कर दिया गया है"। (इस हदीस को इमाम बुख़ारी रहिमहुल्लाह ने इकरमा से मुर्सलन रिवायत किया है)

इमाम इब्न अल-क़य्यिम रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं: "नेक फ़ाल (अच्छी उम्मीद) को पसंद करने और उससे ख़ुश होने में शिर्क का कोई पहलू नहीं है, बल्कि यह सरासर इंसानी फ़ितरत और मिज़ाज की मांग है, क्योंकि इंसान की फ़ितरत हमेशा फ़ायदेमंद चीज़ की तरफ़ आकर्षित होती है"।

इसलिए अपने रब के साथ अच्छा गुमान रखें, अपने तमाम मामलों में उसी पर भरोसा करें, और अल्लाह ताला के साथ बदगुमानी से बचें; क्योंकि उसका हर फ़ैसला भलाई पर आधारित है, और जो आदमी जिस चीज़ से दिल लगा लेता है उसे उसी के हवाले कर दिया जाता है।

عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ (سورة هود: 88)

"उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की तरफ़ मैं लौटता हूँ।"

اللَّهُمَّ اكْفِنَا بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ، وَأَغْنِنَا بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ. اللَّهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الإِيمَانَ وَزَيِّنْهُ فِي قُلُوبِنَا، وَكَرِّهْ إِلَيْنَا الكُفْرَ وَالفُسُوقَ وَالعِصْيَانَ، وَاجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِينَ، اللَّهُمَّ أَعِزَّ الإِسْلَامَ وَالمُسْلِمِينَ، وَأَذِلَّ الشِّرْكَ وَالمُشْرِكِينَ، وَانْصُرْ دِينَكَ وَكِتَابَكَ وَسُنَّةَ نَبِيِّكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعِبَادَكَ المُؤْمِنِينَ. اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُسْلِمِينَ وَالمُسْلِمَاتِ، وَالمُؤْمِنِينَ وَالمُؤْمِنَاتِ، الأَحْيَاءِ مِنْهُمْ وَالأَمْوَاتِ، وَوَفِّقِ - اللَّهُمَّ - أَمِيرَنَا وَوَلِيَّ عَهْدِهِ لِهُدَاكَ، وَاجْعَلْ أَعْمَالَهُمَا فِي طَاعَتِكَ وَرِضَاكَ، وَاجْعَلْ هَذَا البَلَدَ آمِنًا مُطْمَئِنًّا سَخَاءً رَخَاءً، دَارَ أَمْنٍ وَإِيمَانٍ، وَسَائِرَ بِلَادِ المُسْلِمِينَ.

"ऐ अल्लाह! हमें अपने हलाल के ज़रिए अपने हराम से महफ़ूज़ रख, और अपने फ़ज़्ल व करम से हमें अपने सिवा तमाम मख़लूक़ से बेनियाज़ कर दे। ऐ अल्लाह! हमारे दिलों में ईमान की मोहब्बत पैदा फ़रमा और उसे हमारे दिलों में आरास्ता कर दे, और हमारे दिलों में कुफ़्र, गुनाह और नाफ़रमानी की नफ़रत डाल दे, और हमें हिदायत पाए हुए और सीधे रास्ते पर चलने वालों में शामिल फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस्लाम और मुसलमानों को ग़लबा और इज़्ज़त अता दे, शिर्क और मुशरिकों को ज़लील और अपमानित कर, और अपने दीन, अपनी किताब, अपने नबी की सुन्नत और ईमान वाले बंदों की मदद फ़रमा। ऐ अल्लाह! तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों, और तमाम मोमिन मर्दों और औरतों को माफ़ फरमा चाहे वे ज़िंदा हों या वफ़ात पा चुके हों। ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और उनके वली-ए-अहद को अपनी हिदायत की तौफ़ीक़ और रहनुमाई अता फ़रमा, और उन दोनों के तमाम आमाल को अपनी ख़ूशी का ज़रिया बना; और इस मुल्क को अमन व इत्मीनान, फ़रावानी, ख़ुशहाली और ईमान व सलामती का गहवारा बना, और तमाम मुसलमान मुल्कों की भी हिफ़ाज़त फ़रमा।"

ख़ुतबात-ए-जुमा तैयार करने वाली कमेटी।